

उं नमो हग वल्ये आर्यगुहमारु कार्ये ॥ प्रवं मया शु न मे कलित
ममयहम कन्दक वली म हानम श्री विरुवनी स्म ॥ मन क द व नाम य
क्रेमध श्री मन्व गन् उ किमव म सावगाप स्मा वा दित्ये समागम व वृद्ध वृद्ध
तिष्ठु ह सनि ह्यव वा ह्म क गृहि ॥ अक्षी विहमि नक्रणादिहि ॥ नृयमा
नामदा वज्र ममया लंका य वृद्धा विरि न मि हा म न विषर्षु अ न क वा

धर्मरत्न वजाचायं सुरत श्री महाविहार

II-248

विस्तृतं नमस्तुभ्यं ॥ नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं निनाय नाम वाधिसुखं नमस्तुभ्यं ॥
 सुखं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥
 वाधिसुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥
 नायकं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥
 सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥ वज्रं सुखं नमस्तुभ्यं ॥

[illegible]

वाधिसुतनमहासुतन। यद्य कुरु नार वाधिसुतनमहासुतन। इत्येक
तुनाव वासुतनमहासुतन। विकसित वृक्षेन वनाम वाधिसुतनमहा
सुतन। यद्य गहन वनाम वाधिसुतनमहासुतन। यद्य नवन वनाम वा
धिसुतनमहासुतन। मङ्गलाया यन वनाम वाधिसुतनमहासुतन। मैत्रेय
न वनाम वाधिसुतनमहासुतन। एवं पुनर्वासा वाधिसुतनमहासुतन॥

सुप्रसन्नसदृशार्द्धयविवृतं पूर्वसूता रगा वानधर्मदसयति स्म। आदौ कल्याण
मध्यकवेपथु वसानकन्यानस्वर्गस्य वंक्ष्णैक वरं यविपूययिहृद्विपर्यवदा
तवृक्षवयस्यैपुकासयति स्म॥ अथ ज्वरु रगा वानवृक्षयानि वाधिसुताम
हासगास्तु यषत्सर्गु रसवना कसना दूरुयस्वयि वाधिसुतन। रगा व
क्तुमनक सगर्गहृद्विपर्यवदा पुनर्वासा पूर्वतानि यथासमाहृतं वृक्षपर्यक

मापर्वचार्याहं नमः समस्त भगवता कवजा ज्ञेयि कृत्वा स्वहृदय प्रानिस्तु या
रुगावक्रममद वाचवन् ॥ अथावतु गवात् ॥ ३ ॥ अथ वृषाभ्य गोदा गोड वृषाभ्य
॥ कृया कृन् पाभ्यस्तु वाह यन्नि उपड वाच कृ वृमिस्तु वाह यन्नि स्तु वाषीस्तु वा
ह ॥ अति । कर्षीयिद्याममद वति । कर्षीयिद्या आ दा ना कृ वति । कर्षीयिड वा
मदति कर्षीयि नृ पानमप ह वति कर्षीयि नादधी यूक्ता ना ॥ अस्तु ना

॥ स्वहृदयान् ॥ कवजा ज्ञेयि कृत्वा स्वहृदय प्रानिस्तु या ॥ अथावतु गवात् ॥ ३ ॥ अथ वृषाभ्य गोदा गोड वृषाभ्य
॥ कृया कृन् पाभ्यस्तु वाह यन्नि उपड वाच कृ वृमिस्तु वाह यन्नि स्तु वाषीस्तु वा
ह ॥ अति । कर्षीयिद्याममद वति । कर्षीयिद्या आ दा ना कृ वति । कर्षीयिड वा
मदति कर्षीयि नृ पानमप ह वति कर्षीयि नादधी यूक्ता ना ॥ अस्तु ना

यत्तु रूपा वा न धर्म यथा यं रूपा न तस्य सृष्टा मर्गात् रूपा ३ तस्य धर्मः सानकः
स्य वशी कुर्यात् सङ्गुफिय विजान प्रविशु रूपा वि पावनं सान्नि स्व त्य यनं दशु पः
विह वस फ पा विहा व वि स द् व न वि स ना स न सि मा वं च ध्रु व ना वं च ३ क
र्या म ॥ अथ श्रु रूपा वा न सा क स निरु धा वा ना न स म्मा कं वृ द्वा गु हा नाः
पूजा मनु य ध्य रा ड व न स ॥ य धा नू क म व र्णु र द न दि सा म्भ उ यदि सा म्भ

ग ध मं ड व कं द ॥ व पु मा ध कृ त्वा लि ड व न क र्णु का मु द्वा द ॥ गु वं च सा र न
क र्णु वं ॥ व द्वा वि ज्ञा त प द्म म धा वि र्णु य त ॥ द व ला स्त वं न डा वि ग रू स
ह म्भ रा सि मि द् व र सा जालं स नि तं ॥ ला स्त व र्णु य का ठि स म पु रं ॥ उ म धा स्ता
या य स्ता हा ॥ उं गी नां स व स्ता हा ॥ उं व क्क मा या य स्ता हा ॥ उं वृ द्वा य स्ता
हा ॥ उं ला ग म स प द्वा य स्ता हा ॥ उं अ स वा ग मा य स्ता हा ॥ उं ह ह र्णु य स्ता

ॐ ॥ उं जु मृ ग प्रि या य स्ता हा ॥ उं श्रु ति क त व वा य स्ता हा ॥ ॐ सा नि व ज पा नि न
 व गु हा ञ्म म ग प द ह द या नि प ठि ना नि सि द्धा नि ॥ र्य धा वृ क स व र्ण ह द न द ह म
 ॐ अ प दि ष्य वा न्ध म शु न कं रु त्वा ॥ द्वा द श गु ल प्र सा र्णं व सु व र्ण व गु द्वा वं व गु
 स्ता व द श र न कृ ना ग म य म वि व क म यं त म स धि न क म यो प वि न क र्क कृ क म
 मी ध म उ नं क रि त य न्द व र ण क र्ण ग प स वृ प ध र्ण दु जा र्ण हि त क म य ध र्ण

व कृ व र्ण स रु प स र य का टि सि द्ध व र्ण स म न जा मा वि ना र ह ॥ अ स्य द य क्री
 व र ण ज न कृ द् वृ ध प उं आ दि त्वा य न म ४ उं म धा त्वा वा य स्ता हा ॥ प र्व स्या दि
 हि न कृ क म यो प वि प्रि र्य गु वा ध र्म शु न क स म यो कृ ञ् नि न य ः हि न व र्ण
 ज म म कृ ट ध वा न्दु ज ह य ना सृ क म शु वृ ध व कृ म द प णा व स क ः अ स्य ध
 पा ष्ठा व सं र ण ज नं द्यु ना द नं हं व द्यु म म वि क मा य न म ४ उं हि ती स व स्ता हा ॥ ०

दक्षिणस्यादिदिशि कुक स वापि च दन गंधमंठ व करि क्रम गवर्धन
वक्र व नो वक्र मकु ठाक्षि ध वं व व हस्तः लोडन मस्या मातर क सुखा दनं वा
गुगु वृषं ॥ उं वक्र क व सा व कु मा वाय स्वा हा पृथि मायादिदिशि वक्र प
आमा पात्र कु र्गु वृषा न्ध मठ व क व क वा वि वृद्ध स्या न पा न व र्धु व क स
॥ ५ ॥ वक्र स व क मं ड व च वः लोडन मस्या मग मा स व क स वः ध पा वा न्ध वा स

वज्रपुत्र ॥ उं स पित व र्धु वनः वडा य स्वा हा ॥ उ र व स्यादिदिशि न व
म वा प वि द व द्या वृ गंध मधु व क प वि वज्र का गु व र्धु व न फ का र्धे न व
र्धु ला व क स ॥ ५ ॥ वक्र स व क मधु वृष वं व स्याद चिर क नी वं वा म वृष
न वृष ॥ उं वा हि न व र्धु न र्धि माय वृ ह स्या न उं न मः लो ग म स्या दाय स्वा हा ॥
जात्य यादिदिशि व क प द्या प वि व क व द न गंध मंठ व क ह कु पा स प न

[illegible][illegible]

II-218 धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

साक्षात्सर्वपाका ग्रासवीलं कां वदुषिना ॥ सधुल वाहपूर्वमधुन यत्
सदाधिरुक् ॥ उरुं वस्य कवचस्य दधिमांसरुक् ॥ सिंदूरसमनं यथा नूतनम्
वर्धुरुदनपूज्यादिपूजा कर्तव्या ॥ यत्नं वर्धुरुदनपूजा नया ॥ यत्नं
यापयः ॥ घृणमधुना सज्जयित्वा यत्नं वर्धुरुदनपूजा नया ॥ यत्नं
वर्धुरुदनपूजा नया ॥ यत्नं वर्धुरुदनपूजा नया ॥ यत्नं वर्धुरुदनपूजा नया ॥

१०